

नईदुनिया

Friday, March 11, 2016

विश्व में क्लोनिंग साइंस का जनक है रक्तबीज

Published: Thu, 24 Dec 2015 10:41 PM (IST) | Updated: Fri, 25 Dec 2015 04:00 AM (IST)

By: Editorial Team

संतोष शुक्ल, मेरठ। क्लोनिंग के विज्ञान को लेकर मेरठ नई इबारत लिखने वाला है। रक्तबीज नामक राक्षस को क्लोनिंग विज्ञान का जनक बताते हुए मेरठ के दो युवा शोधार्थियों ने दावा किया है कि भविष्य में इसकी पुनरावृत्ति विज्ञान को हैरत में डाल सकती है।

शोध पत्र में कहा गया है कि नया रक्तबीज किसी चमत्कार की वजह से नहीं, बल्कि जमीन पर रक्त की गिरती बूंदों से हो रही क्लोनिंग के तहत बन रहा था। भ्रूण को जमीन से सूक्ष्म पोषण मिला।



यह शोध अमेरिका की इनोवेटिव जर्नल ऑफ मेडिकल साइंस में छपेगा। चीन की अंतरराष्ट्रीय बायोटेक कांफ्रेंस के लिए भी यह पत्र चुना जा चुका है। बायोटेक शोध छात्र प्रियांक भारती और गरिमा त्यागी की मानें तो दुर्गा सप्तशती में वर्णित रक्तबीज नामक राक्षस कोई चमत्कार नहीं, बल्कि अत्यंत विकसित विज्ञान का प्रतीक है।

मां दुर्गा से लड़ाई के दौरान उसके शरीर से निकली रक्तधारा से नए राक्षस बन रहे थे। शोधकर्ताओं का दावा है कि रक्त एवं शुक्राणुओं के बीच 95 फीसदी समानता पाई जाती है।

ऐसे में रक्त से भी जीवन बन सकता है। दोनों में अपने न्यूक्लियस एवं समान प्रोटीन होते हैं। क्रोमेटिक नेटवर्क के जरिये जेनेटिक गुणधर्म अगली पीढ़ी में ट्रांसफर होते हैं। हाल में जापान में रक्त की एक बूंद से छह सौ नए चूहे पैदा किए गए हैं।

<http://naidunia.jagran.com/national-cloning-science-father-is-rakhtbeej-in-world-612689#>